2nd

D.El.Ed. 2nd sem

16 May 2020
Saturday

Edu – 03

'रवीन्द्रनाथ टैगोर' (शिक्षाशास्त्री)

पिता – देवेन्द्रनाथ टैगोर।

माता – शारदा देवी।

जन्म – 7 मई 1861 जोड़ासाँको ठाकुरबाड़ी

प्रमुख ~~कृतियाँ~~ – गीतांजली, गीतिमाल्य, गीताली, कणिका, क्षणिका, शिशु भोलानाथ आदि।

स्थापना → विश्वभारती (शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए)

टैगोर के शिक्षा दर्शन के सिद्धान्त :-

→ छात्रों में संगीत, अभिनय एवं चित्रकला की योग्यताओं का विकास।

→ छात्रों को उत्तम मानसिक भोजन देना।

→ प्रकृति के घनिष्ठ सम्पर्क में रखकर शिक्षा देना।

→ शिक्षा का माध्यम मातृभाषा।

→ शिक्षा का समुदाय के जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध।

→ व्यक्तियों में जन्मजात शक्तियों एवं उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण और सामंजस्यपूर्ण विकास करना।

Scanned with CamScanner

टैगोर के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य अर्थ

"सम्पूर्ण शिक्षा वही है, जो सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।" — टैगोर

उनका कहना है — "शिक्षा न केवल आवागमन से वरन् आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, मानसिक, दासता से भी मनुष्य को मुक्ति प्रदान करती है।"

शिक्षा के उद्देश्य

(1) शारीरिक विकास।
(2) मानसिक विकास।
(3) नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास।
(4) समस्त शक्तियों का विकास
(5) सामाजिक विकास।
(6) राष्ट्रीयता का विकास।
(7) अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण का विकास।

टैगोर के अनुसार पाठ्यक्रम

विषय — अंग्रेजी, संस्कृत, मातृभाषा, इतिहास, भूगोल, प्रकृति अध्ययन विज्ञान, कला/संगीत आदि।

उपयोगी वस्तुएँ — बागवानी, कृषि, क्षेत्रीय अध्ययन, प्रयोगशाला कार्य आदि।

अन्य क्रियाएँ — खेलकूद, नाटक, संगीत, नृत्य मौलिक रचना। समाज सेवा कार्य।

शिक्षण विधियाँ

(1) भ्रमण के समय पढ़ना।
(2) वाद-विवाद तथा प्रश्नोत्तर विधि।
(3) क्रिया विधि।
(4) मातृ भाषा द्वारा शिक्षण।
(5) खेल द्वारा शिक्षण।
(6) स्वानुभव द्वारा शिक्षण।

शिक्षक का स्थान → "ज्ञानी, संयमी, बच्चों के प्रति समर्पित।"

शिक्षार्थी → "स्वयं से प्रेरित होकर गुरु में श्रद्धा रखकर सीखना।"

विद्यालय — एक पवित्र स्थान, आत्मबोध का आधार।
विद्यालय प्राचीन आश्रम की भाँति नगर से दूर प्रकृति की गोद में। 1901 में 'शान्ति-निकेतन' की स्थापना। यहाँ कक्षाएँ पेड़ों के नीचे प्रकृति की गोद में लगती थी। आगे चलकर इस संस्था को 'विश्वभारती' के नाम से जाना गया।

टैगोर की शिक्षा को देन

'भारतीय और पाश्चात्य' दोनों के जीवन को स्पर्श करती है। 'अध्यात्म और भौतिक' दोनों तत्वों का इसमें समावेश।

टैगोर के दर्शन पर प्रभावित रूसो, फ्रॉबेल, ड्युवी का प्रभाव पड़ा, किन्तु इन्होंने अपना नाम और भी ऊँचा कर लिया।